



सूचना एवं प्रौद्योगिकी में हिन्दी का प्रयोग :- समस्याएं व संभावनाएं

आरती पशरीचा

सहायक प्रोफेसर

सतीश पब्लिक शिक्षण महाविद्यालय, रेवाड़ी

Abstract

हमारी सदी सूचना क्रांति की सदी है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों में शीघ्र गति से विकास हुआ है। वसुधैव कुटुम्बकं का आदर्श सूचना एवं प्रौद्योगिकी की दुनिया में पूरी तरह से चरितार्थ होता है। यह एक संयोग ही है कि कम्प्यूटर का विकास सर्वप्रथम ऐसे देशों में हुआ जिनकी भाषा मुख्यतः अंग्रेजी थी ऐसा कोई तकनीकी कारण नहीं है कि अंग्रेजी कम्प्यूटर के लिए आदर्श भाषा समझ ली जाए। परन्तु सामान्य लोगों में यह धारणा फैल गई कि कम्प्यूटर अंग्रेजी के सिवा किसी दूसरी भाषा में काम कर ही नहीं सकता। किन्तु यूनिकोड के पदार्पण के कारण स्थिति बहुत तेजी से बदल गई है। यूनिकोड कोन्सेटियम द्वारा सूचना विनियम के अंतरराष्ट्रीय मानक कूट निर्धारित किए जाने के बाद संसार की लगभग सभी लिपियों को अनुपम पहचान मिल गई है। इस समय हिन्दी में सजाल (Website), चिठ्ठे (Blogs), विपत्र (Chat), खोज (Websearch), सरल मोबाइल संदेश (sms) तथा अन्य हिन्दी सामग्री उपलब्ध है। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का महत्व बढ़ा है और अनेक देश के लोग इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइटों और ईमेल समूहों के माध्यम से हिन्दी सीख रहे हैं। तथा हिन्दी में अपने विचारों का आदान प्रदान कर रहे हैं। अध्ययन बताते हैं कि अभी हाशिए के बाहर खड़े लोगों का यहाँ तक पहुंचना बाकी है। यानि आने वाले सालों में न केवल भारतीय भाषाओं में इंटरनेट का प्रयोग बढ़ेगा, अपितु इंटरनेट ग्रामीण क्षेत्र में

पहुंचकर शहरी क्षेत्र के प्रयोक्ताओं को पछाड़ देगा। आज लोगों को इनके बारे में जानकारी देकर जागरूकता पैदा करने की जरूरत है, ताकि अधिकाधिक लोग कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग करते हुए अपना, हिन्दी का और पूरे हिन्दी समाज का विकास करें।

कुंजी शब्द :-यूनिकोड, मानक कूट, यूनिकोड कन्सोर्टियम, मुक्त कूट,

भूमिका

हमारी सदी सूचना क्रांति की सदी है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों में शीघ्र गति से विकास हुआ है। यह एक संयोग ही है कि कम्प्यूटर का विकास सर्वप्रथम ऐसे देशों में हुआ जिनकी भाषा मुख्यतः अंग्रेजी थी ऐसा कोई तकनीकी कारण नहीं है कि अंग्रेजी कम्प्यूटर के लिए आदर्श भाषा समझ ली जाए। परन्तु सामान्य लोगों में यह धारणा फैल गई कि कम्प्यूटर अंग्रेजी के सिवा किसी दूसरी भाषा में काम कर ही नहीं सकता।

कम्प्यूटर और भाषा

यह तो आप जानते होंगे कि कम्प्यूटर हमारी तरह विभिन्न भाषाएं नहीं समझ सकता, यह केवल बायनरी नंबरों (0 और 1) को ही समझ सकता है, इसलिए हम जो भी अक्षर टाइप करते हैं वह अंततः 0 और 1 में ही परिवर्तित किये जाते हैं तभी कम्प्यूटर उन्हें समझ पाता है, किस भाषा के किस शब्द के लिए कौनसा नम्बर प्रयुक्त होगा इसका निर्धारण करने के नियम विभिन्न कैरेक्टर-सेट (character set) या संकेत-लिपि प्रणाली (encoding systems) द्वारा निर्धारित होते हैं, ये प्रत्येक अक्षर और वर्ण के लिए एक नंबर निर्धारित करके अक्षर और वर्ण संग्रहित करते हैं, यूनिकोड का आविष्कार होने से पहले, ऐसे नंबर देने के लिए सैकड़ों विभिन्न संकेत लिपि प्रणालियां थी, किसी एक संकेत लिपि में पर्याप्त अक्षर नहीं है। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ को अकेले ही, अपनी सभी भाषाओं के अक्षरों को संग्रहित करने के लिए विभिन्न संकेत लिपियों की आवश्यकता होती है, यहां तक कि अंग्रेजी

जैसी भाषा के लिए भी ,सभी अक्षरों, विरामचिह्नों और सामान्य प्रयोग के तकनीकी प्रतीकों हेतु एक ही संकेत लिपि पर्याप्त नहीं थी।

इन संकेत लिपियों में आपस में तालमेल भी नहीं है। इसलिए, दो संकेत लिपियां दो विभिन्न अक्षरों के लिए, एक ही नंबर प्रयोग कर सकती है, अथवा समान अक्षर के लिए विभिन्न नम्बरों का प्रयोग कर सकती है, किसी भी कम्प्यूटर को विभिन्न संकेत लिपियों की आवश्यकता होती है, फिर भी जब दो विभिन्न संकेत लिपियों अथवा प्लेटफार्मों के बीच डाटा भेजा जाता है तो उस डाटा के हमेशा खराब होने का जोखिम रहता है।

यूनिकोड का जन्म:- उपरोक्त समस्याओं को दूर करने के लिए ही यूनिकोड को जन्म दिया गया। जैसा इसके नाम से ही स्पष्ट है कि यह सभी भाषाओं के लिए एक ही तरह से काम करता है, यूनिकोड, प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नंबर प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लैटफार्म हो, चाहे कोई भी प्रोग्राम हो, चाहे कोई भी भाषा हो, यूनिकोड स्टैंडर्ड को ऐपल, एच.पी., आई.बी.एम. जस्ट सिस्टम, माइक्रोसाफ्ट, औरककल, सैप, सन, साईबेस, यूनिसि जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड की आवश्यकता आधुनिक मानदंडों जैसे एक्स.एम.एल., जावा एल.डी.ए.पी., कोर्बा 3.0, डब्ल्यू.एम.एल. के लिए होती है और आई.एस.ओ./आई.ई.सी. 10646 को लागू करने का अधिकारित तरीका है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजर्स और कई अन्य उत्पादों में चलता है, अधिकतर उत्पाद आज यूनिकोड समर्थि है, यूनिकोड स्टैंडर्ड की उत्पत्ति और इसके सहायक उपकरणों की उपलब्धता, ही के अति महत्वपूर्ण विश्वव्यापी साफ्टवेयर टेक्नोलॉजी रुझानों में से है।

यूनिकोड कन्सॉशियम के बारे में

यूनिकोड कान्सॉशियम, एक नॉन-प्रोफिट संगठन है, जिसकी स्थापना यूनिकोड स्टैंडर्ड, जो आधुनिक साफ्टवेयर उत्पादों और मानकों में पाठ की प्रस्तुति को निर्दिष्ट करता है के विकास और इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। इस कान्सॉशियम के सदस्यों में, कम्प्यूटर और सूचना उद्योग में विभिन्न निगम और संगठन शामिल है। भारत सरकार भी

इसके सदस्यों की सूची में है। इस कन्साशियल का वित्तपोषण पूर्णतः सदस्यों के शुल्क से किया जाता है। यूनिकोड कान्साशियम में सदस्यता, विश्व में कहीं भी स्थित उन संगठनों और व्यक्तियों के लिए खुली है जो यूनिकोड का समर्थन करते हैं और जो इसके विस्तार और कार्यान्वयन में सहायता करना चाहते हैं।

वर्तमान परिस्थितियां

इस समय हिन्दी में सजाल (Website) , चिठ्ठे ,(Blogs), विपत्र (Chat), खोज (Websearch), सरल मोबाइल संदेश (sms) तथा अन्य हिन्दी सामग्री उपलब्ध है। इससे अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का महत्व बढ़ा है और अनेक देश के लोग इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइटों और ईमेल समूहों के माध्यम से हिन्दी सीख रहे हैं। तथा हिन्दी में अपने विचारों का आदान प्रदान कर रहे हैं।

अध्ययन बताते हैं कि अभी हाशिए के बाहर खड़े लोगों का यहाँ तक पहुंचना बाकी है। यानि आने वाले सालों में न केवल भारतीय भाषाओं में इंटरनेट का प्रयोग बढ़ेगा, अपितु इंटरनेट ग्रामीण क्षेत्र में पहुंचकर शहरी क्षेत्र के प्रयोक्ताओं को पछाड़ देगा। आज लोगों को इनके बारे में जानकारी देकर जागरूकता पैदा करने की जरूरत है, ताकि अधिकाधिक लोग कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग करते हुए अपना, हिन्दी का और पूरे हिन्दी समाज का विकास करें।

यूनिकोड समर्थन के प्रयास आधे-अधूरे और बेमन से किए गए लगते हैं। जब तक पूरी मशीनरी इस बात को पक्का मान कर नहीं चलती कि भविष्य की योजनाएँ यूनिकोड आधारित ही होनी चाहिए, कोई भी प्रयास न केवल हमें वहीं खड़ा रखेगा जहां हम हैं, बल्कि पीछे भी ले जा सकता है। इसी तरह प्रोद्योगिकी की दिशा में काम शून्य के आस-पास है। अधिकतर शामिल सॉफ्टवेयरों के इंटरफेस एक आम आदमी को छोड़िये, कम्प्यूटर के अनुभवी प्रयोक्ताओं को भी सिरदर्द दे सकते हैं। एक और कमजोरी खुद हिंदीकरण में है। अनुवाद का

स्तर बहुत अच्छा नहीं है और वर्तनी की गलतियाँ जो बिल्कुल अस्वीकार्य होनी चाहिए, हर जगह पसरी पड़ी हैं।

इंटरनेटके इस क्षेत्र में वर्तमान हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में कुछ तकनीकी समस्याएँ आज भी हमारे सामने खड़ी है। जिनके समाधान के लिए विशेष ध्यान दिया जाना जरूरी है। इनमें कुछ इस प्रकार है।

1. जटिल प्रक्रिया

हिन्दी की देवनागरी लिपि के मूल अक्षरों (स्वर एवं व्यंजन) की मूल संख्या सिर्फ 49 है। आश्चर्य की बात है। फिर भी हिन्दी को जटिल भाषाओं की श्रेणी में रखा गया है। जबकि अन्य देश जैसे जापानी, चीनी, कोरियाई की संयुक्त लिपि, जिसके 25000 से ज्यादा अक्षरों को युनिकोड में कूट निर्धारित (Unicode) किया गया है, को अपेक्षा कृत सरल लिपि कहा गया है। इसका प्रमुख कारण है कि युनिकोड मानक कूटों में मूल अक्षरों और मात्राओं को ही स्थान दिया गया है। संयुक्ताक्षरों को तथा बारह खड़ी को प्रकट करने के लिए कम्प्यूटर के आन्तरिक संसाधन हेतु जटिल प्रक्रियाएँ अपनायी पड़ती है। कम्प्यूटर में देवनागरी भाषा का भण्डारण एवं संसाधन सिर्फ मूल कूटाक्षरों में होता है। जबकि वास्तव में संयुक्त अक्षरों को प्रकट करने तथा मुद्रण के लिए ओपन टाईप फॉन्टस का उपयोग आदि करना पड़ता है। देवनागरी लिपि के लिए ओपन टाईप फॉन्टस में जटिल नियमों का उपयोग करना पड़ता है।

2. अधिक लागत

16 बिट कूट होने के कारण युनिकोड कूटों के पाठ व डेटा को पुराने आपरेटिंग सिस्टम वाले कम्प्यूटर कार्यान्वित नहीं कर पाते। विण्डोज एक्सपी और लिनक्स आदि में युनिकोड पूरी तरह कार्यान्वित करने में कई तरह की समस्याएँ हैं। युनिकोड को

सही रीति से लागू करने के लिए कम्प्यूटर की क्षमता, स्पीड, मेमोरी, हार्डडिस्क, सभी का आधुनिकरण करना होगा, जिसमें भारी लागत आती है।

3. अपेक्षाकृत अधिकस्थान

युनिकोड पाठ व डेटा तुलनात्मक दृष्टिसे दुगुना स्थान घेरता है। युनिकोड की पुरानी 8 बिट कम्प्यूटर प्रणालियों के मध्य में तालमेल की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इसके 8 बिट प्रतिबिम्ब रूपक UTF- 8code निर्धारित किए गये हैं।

4. हिन्दी ई-मेल सन्देशों का पाठ विकृत हो जाना :

युनिकोड कूटों में सम्प्रेषित हिन्दी ई-मेल सन्देश अक्षर अन्य कूटों में विकृत होकर मिलते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी ने सन्देश में यदि तीन अक्षर (कखग) 16 बिट शुद्ध युनिकोड में लिखकर भेजे हैं। तो वह प्रेषिती के पास कभी UTS8कूट में बदलकर तोकभी प्रश्नवाचक चिन्ह में बनकर हिन्दी संदेश का कूड़ा बना देते हैं। जिसमें भारी समस्या पैदा होती है। सन्देश प्राप्तकर्ता परेशान होकर रोमन लिपि में हिन्दी संदेश भेजने को मजबूर होते हैं। इसका कारण है कि विभिन्न वेब-पोर्टल एवं ई-मेल सेवा प्रदाताओं ने अभी तक युनिकोड/यूटीफ-8 को डिफाल्ट रूप में पूर्व- निर्धारित करने के लिए उपयोक्ता को कोई विकल्प प्रदान नहीं किया है। लेकिन प्रसिद्ध इंटरनेट सर्च इंजन गूगल द्वारा प्रदान की जा रही "gmail.com" द्वारा उपयोक्ताओं को डिफाल्ट रूप से सन्देश यूटीफ-8 रूप में भेजने का विकल्प प्रदान किया गया है। जिससे जी मेल पर भेजी गई हिन्दी ई-मेल सही रूप में प्रकट होती है। सभी ई-मेल सेवा प्रदाताओं को ऐसे विकल्प प्रदान करने चाहिए।

5 मुक्त कूट या मुफ्त न होना

विभिन्न कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज के प्रोग्रामों के सोर्स कोड उपयोगकर्ताओं के लिए उन्मुक्त नहीं है। उपयोगकर्ता उनकी विशेषताओं में अपने अनुकूल कोई परिवर्तन या सुधार नहीं कर सकता जिसमें विकास सीमित रह जाता है। साथ ही सॉफ्टवेयर महंगे होने के कारण लोग इनकी अनुज्ञप्ति प्राप्त प्रति खरीद नहीं पाते हैं और उन्हें कोई अद्यतन करने की सेवा नहीं मिल पाती है। माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज प्रचलन प्रणाली में युनिकोड को कार्यान्वित करने वाला प्रोग्राम युनिकोड स्क्रिप्ट प्रोसेसर (USP.DLL) मुक्त कूट नहीं है, जिससे अन्य व्यक्ति अपने अनुकूल कोई सुधार नहीं कर पाते।

इसमें विपरीत लिन्क्स आपरेटिंग सिस्टम का मुख्य अंश मुक्त कूट है जिसमें इसके सोर्स कोड भी सर्वसुलभ हैं। कोई भी प्रोग्रामर इसमें सुधार कर अपना योगदान कर सकता है। लेकिन इसका कोई मानक उपलब्ध नहीं होने के कारण इसके अनेक रूप उपलब्ध हैं। जिससे यह सभी इतना लोकप्रिय नहीं हुआ है।

6 शुद्ध व्यंजनों के मानक-कूट निर्धारित न होना

देवनागरी युनिकोड में शुद्ध व्यंजनों के लिए कूट-निर्धारण नहीं किया गया है। बल्कि अकार-युक्त व्यंजन अक्षरों को ही शामिल किया गया है। जिससे देवनागरी जैसी सरल सपाट और ध्वनि विज्ञान की कसौटी पर सर्वोत्तम सक्षम लिपि को भी चीनी, जापानी, कोरियाई (CJK) अरबी, फारसी जैसे क्लिष्ट लिपियों (complex scripts) के वर्ग में दर्ज होना पड़ा है। इसके कारण हलन्त का उलटा प्रयोग करके शुद्ध व्यंजन प्रकट किए जाते हैं। जो तर्कसंगत नहीं होता। देवनागरी की इण्डेक्सिंग करने में काफी समस्याएँ सामने आती हैं। यह प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP) तथा बोली से पाठ (Speech to text) जैसे उन्नत कम्प्यूटर प्रयोगों के लिए भी जटिल समस्या बन गया है।

7 महंगा सदस्यता शुल्क

युनिकोड ओर्गेनाइजेशन का सदस्यता शुल्क भी काफी महंगा है और बिना सदस्य बने आपको कोई सुझाव या विकास या सुधार प्रस्ताव देने का कोई अधिकार नहीं मिलता। सिर्फ आप चर्चाओं में भाग ले सकते हैं, परन्तु वैद्य तौर पर स्वीकार या रिकार्ड नहीं किया जाता।

8 मुद्रण अनुकूल सुन्दर ओपेन टाईप फोंट्स का अभाव

अभी तक भारतीय भाषाओं के लिए छपाई योग्य सुन्दर आपेनटाईप फोंट्स पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हो पाये। इसके कारण छपाई आदि मुद्रण- सज्जा सॉफ्टवेयर युनिकोड अनुकूल नहीं है। एडोब पेजमेकर, फ्रेममेकर, क्वार्क एक्सप्रेस, फ्रीहैंड, पलेश, कोरल ड्रा, आदि मुद्रण पूर्व पृष्ठसज्जा या डिजाइनिंग करने वाले सॉफ्टवेयर अभी भी युनिकोड आधारित ओपेन टाईप देवनागरी फोंट्स की तकनीकी के अनुकूल नहीं है। इनमें युनिकोड पाठ का हर अक्षर सिर्फ प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के रूप में प्रकट होता है। इसलिये छपाई के लिए युनिकोडित पाठ को फिर से 8- बिट वाले पुराने टू-टाईप फोंट्स में परिवर्तित करना पड़ता है।

9 फोंट - कूट- परिवर्तक की त्रुटियाँ

भारत सरकार द्वारा अभी तक 8 बिट वाले पुराने देवनागरी फोंट-कूटों का भी मानकीकरण नहीं हो पाया है। कुछ फोंट-कूटों का भी मानकीकरण नहीं हो पाया है। कुछ फोंट परिवर्तक सॉफ्टवेयर जरूर उपलब्ध कराये गए हैं, लेकिन ये मुक्त-स्रोत नहीं हैं। और इनके द्वारा परिवर्तित पाठ में अनेक भूलें रह जाती हैं। जिससे दुबारा प्रुफ रीडिक करनी पड़ती है। मानव श्रम घण्टों की बाबत करोड़ों रुपये की वार्षिक राष्ट्रीय हानि होती है। अतः जरूरी ही की ऐसा ओपेन सोर्स प्रोग्राम मुफ्त उपलब्ध कराया जाए, जो सिर्फ एक माऊस-क्लिक मात्र करने पर विभिन्न फोंट्स आदि में संसाधित चुने गए (selected) पाठ को युनिकोड से आवश्यक पुराने 8 बिट फोंट में बिना किसी भूल के बदल दे।

10कम्प्यूटर पाठ्यक्रमों में हिन्दी शामिल नहीं

भारत सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में अग्रणी स्थान पर है। प्रतिवर्ष देश को आई. टी. के खाते में अरबों रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। किन्तु भारत के किसी भी पाठ्य क्रम में आज तक सूचना विनियम के लिए भारतीय मानक (ISCLL) और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय लिपि मानक (UNICODE) को भी एक विषय रूप तक के रूप में शामिल नहीं किया गया है। हिन्दी में कम्प्यूटिंग तो दूर की बात है। जिसके कारण नये कम्प्यूटर आपरेटरों, प्रोग्रामरों, इंजीनियरों को सिर्फ US- English में ही प्रोग्रामिंग करना या डेटा प्रविष्ट करना आता है।

एक आई.टी. प्रोफेशनल होने के बावजूद इसमें बहुत दिक्कतें आती हैं। मैं सिर्फ कल्पना ही कर सकती हूँ कि एक ग्राम गैर-आई.टी. तकनीकी क्षेत्र का व्यक्ति जो बस कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करना चाहता है, इन सॉफ्टवेयरों के साथ कैसे जुड़ रहा होगा।

यह जरूरी है कि सरकारी संस्थाओं द्वारा उसे इसके संस्थापन और प्रयोग में आवश्यक सहयोग और सहायता मिले। यह सहायता फोन, ईमेल, डाक, वेबसाइट (सामान्य प्रश्नोत्तर) या व्यक्तिगत तौर पर उपलब्ध कराई जा सकती है।

संभावनाएँ

आधुनिक भारत में कम्प्यूटर की सहायता से इंटरनेट यानि विश्वव्यापी अंतर्जाल का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। इसके प्रचार-प्रसार में हिंदी व स्थानीय भाषाओं के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। आईएएमआई (इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया) के देशव्यापी सर्वेक्षण में चौकाने वाले तथ्य उजागर हुए हैं, जिसे जानकर यह स्पष्ट हो गया है कि न केवल इंटरनेट पर हिंदी व हिंदी साहित्य का भविष्य चमकदार है, अपितु ग्रामीण क्षेत्र हिंदी व देसी भाषाओं के माध्यम से इंटरनेट प्रयोग की दिशा में शहरी क्षेत्र को पछाड़ने वाले हैं।

सामान्य सी बात यह है कि भारत का आम आदमी आज भी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को ही समझता है। इसलिए बैंक, मोबाइल कंपनियां व अन्य क्षेत्र जन साधारण को जोड़ने के लिए हिंदी में ही अपने उत्पादों व तकनीक की जानकारी लोगों तक पहुंचा रहे हैं। विशेषकर ग्रामीण व सामान्य समझ के लोग अपनी भाषा में इंटरनेट संबंधी तकनीक का प्रयोग समझकर ही उसका प्रयोग कर रहे हैं। तकनीकी क्षेत्र के लोग भी उनकी भाषा में ही उन्हें समझा रहे हैं। इस प्रकार तकनीक के विस्तार एवं प्रयोग की जानकारी व प्रचार-प्रसार में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

आईएमएआई के साथ-साथ इंडियन मार्केट रिसर्च ब्यूरो (आईएमआरबी) के अध्ययन के अनुसार भारत में इंटरनेट प्रयोग करने वालों का करीब 40 प्रतिशत हिस्सा यानि 4.5 करोड़ भारतीय हिंदी व अन्य देशी भाषाओं में इंटरनेट का प्रयोग कर रहे हैं। जैसे-जैसे आम आदमी इंटरनेट व अन्य तकनीक को समझ रहा है इसका प्रयोग भी तेजी से बढ़ रहा है। भारत में ग्रामीणों तक इसकी पहुंच बनने के बाद हिंदी व देशी भाषाओं में इंटरनेट के प्रयोग करने वालों की संख्या में तेजी से विस्तार होगा। भारत के मध्यम वर्ग में खेल की तरह इंटरनेट के प्रयोग, विदेशी कार्टूनों को हिंदी में परिवर्तित करने तथा अन्य प्रयोगों के बढ़ने से निश्चित रूप से इसके प्रयोग में तेजी आएगी। अध्ययन बताते हैं कि अभी हाशिए के बाहर खड़े लोगों का यहां तक पहुंचना बाकी है। यानि आने वाले सालों में न केवल भारतीय भाषाओं में इंटरनेट का प्रयोग बढ़ेगा, अपितु इंटरनेट ग्रामीण क्षेत्र में पहुंचकर शहरी क्षेत्र में प्रयोक्ताओं को पछाड़ देगा।

पर हिंदी कितनी भी सुविधा अंतर्जाल पर आ जाये उसका लाभ तब तक नहीं है जब तक उसे सामान्य समाज की आदत नहीं बनाया जाता। इसका दूसरा मार्ग यह है कि इंटरनेट कनेक्शन सस्ते हो जाए तो अल्प धन वाला वर्ग भी इससे जुड़े, जिसके बच्चों को हिन्दी माध्यम में शिक्षा मजबूरीवश लेनी पड़ रही है। यकीनन इसी वर्ग के हिंदी भाषा का भविष्य को समृद्ध

करेगा। ऐसा नहीं कि उच्च वर्ग में हिंदी प्रेम करने वाले नहीं हैं अगर ऐसा होता हो इस समय इतना लिखने वाले नहीं होते-पर उनकी संख्या कम है।

पिछले कुछ वर्षों में इस दिशा में तेजी से परिवर्तन हुए हैं तथा कम्प्यूटर पर हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ा है। अब तो कम्प्यूटर को निर्देश देने और ब्राउजर तक की सुविधा हिंदी में उपलब्ध है। विभिन्न विषयों का ज्ञान विज्ञान डिजिटल रूप में हिंदी में आ रहा है। भारत में जब व्यापक रूप में कम्प्यूटर आरंभ किया गया उस समय सरकार की जल्दबाजी के कारण भारतीय भाषाओं के लिए अपने फॉन्ट की प्रतीक्षा नहीं की गई जिसके कारण काफी अराजकता कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग में देखी जाती है। परंतु अब युनिकोड की उपलब्धता और कोड परिवर्तकों की खोज ने इस समस्या को बड़ी सीमा तक सुलझा दिया है। इसका अभिप्राय यह है कि कम्प्यूटर पर हिंदी के प्रयोग के लिए अब आसमान दूर-2 तक खुला है। यहां फिर दोहराना होगा कि भविष्य की विश्व भाषाओं में यह भी एक शर्त समझी जाती है कि वे कम्प्यूटर की भाषा हो। हिंदी इस कसौटी पर भी खरी उतर रही है। इसलिए आने वाला समय हिंदी का समय है।

मंजिल अभी दूर, पर चलते रहना है जरूर

2012

SRJIS

इस समय हिन्दी में सजाल (Website) , चिठ्ठे ,(Blogs), विपत्र (Chat), खोज (Websearch), सरल मोबाइल संदेश (sms) तथा अन्य हिन्दी सामग्री उपलब्ध है। इससे अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का महत्व बढ़ा है और अनेक देश के लोग इन्टरनेट पर विभिन्न वेबसाइटों और ईमेल समूहों के माध्यम से हिन्दी सीख रहे हैं। तथा हिन्दी में अपने विचारों का आदान प्रदान कर रहे हैं।

संदर्भ:-

1. भारत सरकार, प्रशासकीय भाषा तकनीकी विभाग, आफिस मेमोरण्डम सं. 12015/7/2008-OL
2. यूनिकोड कोन्सोर्टियम, द यूनिकोड स्टैण्डर्ड-2.0, पब्लिशर्स एडिशन वैसले डेवलपर्स प्रैस (1996)-
3. जुका कोरपेला-ए प्युटोरियल ज्ञान करेक्टर इसुस
4. जैक चेन- भाषायी विविधता, कम्प्यूटर और यूनिकोड 1995 केनेड
5. www.languageinindia.com